



पो. बा. नं. २१३, डॉ. डी. एन. रोड, बंबई.  
टेलीफोन: ४१५०२७१ • तार: इंडियाना

5 अप्रैल, 88

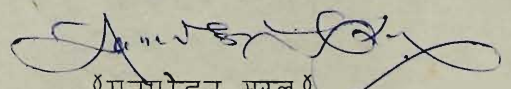
आदरणीय रज़ा जी,

आपका पत्र मिला. आश्चर्य हुआ कि आपको धर्मयुग की प्रति इस बार भी नहीं मिली, जबकि उसे रजिस्टर्ड पोस्ट से भेजा गया था. पैकेट में धर्मयुग की दो प्रतियां तथा लेख की कुछ कतरनें थीं. पैकेट यहां से 8 मार्च, 88 को भेजा गया है. आपका यह पत्र 23 मार्च, 88 का लिखा हुआ है, तब तक उसे मिल जाना चाहिए था. इतना संतोष है कि पारदर्शियां आपको मिल गयीं. उम्मीद करता हूं कि वह पैकेट भी आपको आगे-पीछे मिल ही जायेगा.

यह पत्र मैं गोरबियो के पते पर नहीं भेज रहा हूं क्योंकि पत्र पहुंचने तक आप वहां रहेंगे या नहीं <sup>यह 24 वें नहीं है</sup> निस्संदेह इस समय फ्रांस में बहुत हलचल होगी. हम लोग भी वहां होनेवाले चुनावों के बारे में समाचार पढ़ते रहते हैं. जिन दिनों मैं वहां था, मैंने दोनों राजनीतिक दलों के नेताओं से बातचीत की थी. तब इस बात की आशा की जा रही थी कि मितेरां दोबारा चुनाव नहीं लड़ेंगे.

इधर बंबई में कला संबंधी बहुत-सी गतिविधियां हैं. नये और पुराने चित्रकारों के प्रदर्शन हो रहे हैं. भोपाल में अभी-अभी "कविता एशिया" हो चुकी है. अखबारों में उसकी अच्छी चर्चा रही. आपके मित्र अशोक जी ने मुझे आमंत्रित किया था किंतु मैं जा नहीं सका. फिर कभी गया तो उनसे मिलूंगा. जानिम को नमस्कार कहिएगा. <sup>किसी' लाल शीतल वन में गले मिले थे, १५</sup>  
<sup>जिस कला समीक्षक की वार्ता का आशय जान २१.</sup>  
शेष शुभ. पत्र लिखिएगा.

आपका,

  
मनमोहन सरल  
सहायक संपादक

श्री एस. एच. रज़ा,  
पेरिस.